²ÖÏ. <. ŸÖŸÖßµÖ ¾ÖÂÖ

ØÆ¤ß :- ऐच्छिक -**IX** ÃÖ¡Ö : **V**

¾ÖÂÖ -2017-18

³ÖÖÂÖÖ ×¾Ö–ाान तथा विविध विमर्श

Coursc code - U HIN - 504

बी.ए.तृतीय वर्ष के अध्ययन के पाठ्यक्रम अंतर्गत छात्रो की सुविधा की दृष्टी से विभिन्न ¯ÖÖŠ¶ घटकों का समावेश किया है । मनुष्य समाजिक प्राणी है । जिस प्रक़ÖÖर वह अपने विचार दुसरों को सुनाना चाहता है, उसी प्रकार दुसरों के विचार भी सुनना चाहता है । अभिव्यक्ति मनुष्य की स्वाभाविक़Öü ‡“”Ö Æ । भाषा मनुष्य के विचार विनीमय का प्रमुख साधन है । भाषा के बारे में मनुष्य के मन में अनेक जि–ÖÖÃÖÖ‹ ÆÖŸÖß Æ | ‡ÃÖ ¯ÖÖšयक्रम के अंतर्गत भाषा का अर्थ, परिभाषा, ध्वनि सिध्दांत , ध्वनियंत्र , Ã¾Ö¸ ¾µÖजन का परिचय आदि सभी ŸÖŸ¾ÖÖ का अध्ययन किया जायेगा ।

³ÖÖÂÖÖ ×¾Ö–ाान में भाषा का वै–ाानिक अध्ययन किया जाता है । भाषा वि–ाान भाषा संबंधी सभी समस्याओं का समाधान करता है । भाषा वि–ाान का संबंध विश्‍व की सभी भाषाओं ÃÖ Æ | ³ÖÖÂÖÖ ×¾Ö–ाान विश्‍व भाषा शिक्षण में उपयोगी है । भाषा वि–ाान आज –ाान की स्वतंत्र शाखा के रुप में विकसित हुआ Æ |

–ाानात्मक उद्‌देश्य :-

तृतीय वर्ष के V (¯ÖÖ“Ö¾Ö) ÃÖ¡Ö ´Ö ³ÖÖÂÖÖ×¾Ö–ाान तथा विविध सिध्दांत का समावेश किया गया है । ध्वनि ×ÃÖ¬¤ÖŸÖ ³ÖÖÂÖÖ ×¾Ö–ाान की महत्वपूर्ण शाखा है । इस शाखा में विद्यार्थी वाकµÖ ¸×“ÖŸÖ ¿Ö²¤Ö क़Ö क्रमबद्द और वै–ाानिक अध्ययन कर पायेंगें । ध्वनि सिध्दांत के अंतर्गत ध्वनि की परिभाषा ध्वनियोंको उत्पन्न करनेवाले अंग, ध्वनियंत्र, ध्वनियों का वर्गीकरण आदि का अध्ययन कर सकेंगे । द्वितीय इकाई में ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ वाक्µÖ¡Ö , ध्वनिगूण, ध्वनिग्राम आदी का अध्ययन किया जायेगा क्योंकि ध्वनि क़Ö उत्पादन मानव के मुखांगो से होता है, तो श्रवण कान से होता है । ध्वनि मुख्यत: ध्वनि तरंगो के माध्यम से होता है। ये ध्वनि-तरंगे वाक़Ö क्रियÖ ÃÖ चलकर होता Æ†Ö कर्णेद्रियÖ तक पहुँचकर ध्वनिका अनुभव करती है । इससे विद्यार्थी ध्वनि परिवर्तन के कारण, वर्गीक़Ö¸ÖÖ, श्रवण, आदी का अध्ययन कर सकेंगे ।

इकाई तीन के अंतर्गत हिंदी वर्णमाला को दो विभागो में विभाजित गया है।

1.Ã¾Ö¸ü   2. व्यंजन

इसके माध्यम से छात्रों को स्वर और उसके भेद प्रकार का –ाान देना उसके उच्चारण तथा प्रयोग की सही जानकारी देना महत्वपूर्ण है इसलिए पाठ्यक्रम में स्वर-व्यंजन के परिचय के माध्यम से स्वर तथा व्यंजन के उच्चारण के आधार पर, प्रयत्न के आधार पर सदोष तथा अघोष वर्ण अल्पप्राण, महाप्राण का प्रयोग तथा जानकारी इस अध्ययन से छात्र को प्राप्त हो जाएगी।

चतुर्थ इकाई में वर्तनी के नियम के द्वारा हिंदी के वर्तनी कां x¾Öx¾Ö¬Ö ¯ÖÆü»Ö†ü Ö को लेकर 19 वी शताब्दी के अंतिम चरण से ही विविध प्रयास दे रहे है। इसी तारतम्य के साथ विद्यार्थीयों को जो›ü ने का प्रयास इस पाठ्यक्रम के द्वारा किया जा रहा है। भाषा तथा व्याकरणिक नियमों में हो रहे बदलाओं से छात्रो को रु-²Ö-रु कराने तथा उसका –ाान देन का प्रयास इसमे किया गया है। इसके माध्यम से छात्र कि लेखन कौशल में नि¯Önता »ÖÖने को कौशल प्राप्त कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम की उपलब्धि :-

बी.ए. तृतीय वर्ष के भाषा वि–ाान तथा विविध विमर्श हो गये। ध्वनि सिध्दांत के स¾Ö1ý¯Ö †Ö¸ü शाखाओं का –ाान प्राप्त हुआ। ध्वनि का वर्गीकरण, ध्वनिपरिवर्तन के कारण आदी का –ाान विद्यार्थीयों को प्राप्त हुआ। साथ ही वर्तनी तथा व्याकरणिक नियम, भेद, स्वर-व्यंजन के प्रकार, प्रयोग की विधि †Öx¤ü का –ाान प्राप्त हुआ। हिंदी भाषा के उद्‌भव तथा विकास के बारे में विचार से जानकारी प्राप्त होने के कारण छात्रों में विचार से जानकारी प्राप्त होने के कारण छात्र में हिंदी भाषा के प्रति रूचि ‹¾Ö x•Ö–ासा निर्माण हुई।

प्रश्नपत्र - IX

³ÖÖÂÖ ×¾Ö–ाान तथा ×¾Ö×¾Ö–Ö ×¾Ö´Ö¿Ö

इकाई 1 ध्वनि सिध्दान्त

अ) ध्वनि की परिभाषा

ब) ध्वनि यंत्र

इकाई 2 अ) ध्वनि - परिवर्तन के कारण

ब) ध्वनि - परिवर्तन के दिशाए

इकाई 3 अ) स्वर व्यंजन का परिचय

इकाई 4 वर्तनी के निय´Ö

इकाई 5 अ) हिंदी भाषा का : उद्‌भव

ब) हिंदी भाषा का विकास

²ÖÛ. ‹. III (2015 -16, 16 -17, 17 -18)

ØÆ¤ß - ऐच्छिक (पेपर - X) **ÃÖ¡Ö - V**

ÃÖÖ×ÆŸµÖ¿ÖÖÃ¡Ö - X

Course Code -U - HIN- 505

QIM.1.1.1 -

²ÖÛ.‹.ŸÖ߯µÖ वर्ष हिंदी ऐच्छिक पाँचवे आयन में दसवें पेपर साहित्यशास्त्र के अंतर्गत साहित्य का सैद्धांतीक दृष्टि से अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम निश्चित किया गया है । भारतीय आ“ÖÖर्यो ने काव्य अर्थात साहित्य के प्राप्त तत्व की खोज में जो विभिन्न सिद्धांत प्रतिष्ठापित किये है , उन्हें यहाँ रखा गया है । काव्य की परिभाषा हेतू, प्रयोजन, तत्व इस सिध्दांत अलंकार सिंद्धांत और कूछ अलंकारो को उनके लक्षण के आधार पर उदाहरणों सहित पाठ्यक्रम में रखा गया है ।

-ाानात्मक उद्देश्य (Learning Objectives) :-

×¾Ö×³Ö®Ö ³ÖÖ¸üŸÖßµÖ †Ö“ÖÖµÖÖë «üÖ¸üÖ ¯ÖÃÖÖêÖ की गई परिभाषाएँ सम–ने काव्य के कारण उसके प्रयोजन, रस सिद्धांत के अंतर्गत रस का स्वरुप और अंग, अलंकार सिध्दांत का ऐतिहासक परिप्रक्ष्Ö , अलंकारों की निश्चिती के लिए विभिन्न आचार्यो का अलंकार सिध्दांत मे योगदान आदि को सम–ने और काव्य का सैद्धांतिक दृष्टी से अध्ययन कराने की दृÛÂ™ü ÃÖê ¯ÖÃÖÖêत पाठ्यक्रम निश्चित किया गया है । इसके आलावा कुछ शब्दालंकार और अर्थालंकार के भेदों को विद्यार्थीयों को सम–ाने के प्रयास से ¯ÖÃÖÖêत पाठ्यक्रम रखा गया है ।

पाठ्यक्रम की उपलब्धि (Course Outcome) :-

¯ÖÃÖÖêÖ पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों को साहित्य का सैद्धांतिक दृष्टि से ´ÖÆüŸ¾Ö ÃÖ´Ö–ाने का †¾ÖÃÖ¸ü ×´Ö»ÖÖ | इन सिद्धांतो को पढने के कारण छात्रों ने ³ÖÖ¸üŸÖßµÖ †Ö“ÖÖµÖÖë को सम–ने की प्रयास किया । काव्य के प्ररणÖस्त्रोत, काव्य प्रयोजन, रस , अलंकार आ×¤ü का बुनियादी तत्वो को सम–ने के कारण उनमें साहित्य की दृष्टी से सोचने की प्रगल्भता उत्पन्न हुई ।

प्रश्नपत्र - X

ÃÖÖ×ÆŸµÖ¿ÖÖÃ¡Ö

इकाई 1 अ) काव्य की परिभाषा

ब) काव्य हेतू

इकाई 2 अ) काव्य प्रयोजन

ब) काव्य के तत्व

इकाई 3 रस सिध्दान्त

अ) रस का स्वरुप (रससुत्र)

ब) रस के अंग

इकाई 4 अलंकार सिध्दांत

अ) अलंकार की ¯Ö×¸3ÖÖÂÖÖ <¾Ö´Ö Ã¾Ö1√¯Ö

ब) अलंकार का वर्गीकरण

इकाई 5 क) अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति, श्लेष, उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास आदि अलंकारो का स्पष्टीकरण (उदाहरण के साथ)

²Öß. ‹. ŸÖŸÖßµÖ ¾ÖÂÖ

ØÆ¤ß - ऐच्छिक (पेपर - XI)   ÃÖ¡Ö - V

प्रयोजन - मुलक ØÆ¤ß - I

Course Code -U - HIN-506

बी.ए. तृतीय वर्ष के अध्ययन के प्रयोजनमुलक हिंदी के अंतर्गत ¯ÖÃŸÖŸÖ पाठ्यक्रम को सुविधा के ¥ÂÙ™ß से विभिन्न घटकों का समावेश किया गया है।

हमारा देश विश्व का महान लोकतंत्र है। यहाँ विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति के लिए अनेक प्रकार की बोलियाँ एवं भाषाएँ व्यवहार में लाई जाती है। अपने सभी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को गतिशीलता प्रदान करना, सरकारी संस्थाओं का सवैधानिक दायित्व के साथ नैतिक कर्तव्य भी हो •ÖÖŸÖÖ Æî |

वैश्विक धरातल पर संचार-´ÖÖ¬µÖ´ÖÖ ´Ö ÆÖ›ü मची हुई है। हिंदी को बहूमूखी विकास के लिए, ´Ö»Ö¹ý¯Ö ´Ö ØÆ¤ß-×“ÖŸÖन, मनन एवं लेखन की प्रक्रिया को सर्वाधिक प्रत्यय देना युगीन आवश्यकता है। भाषा के व्याकरण स´´ÖŸÖ प्रयोग पर बल देते हुए, भाषण, संभाषण, अभिव्यÛŒŸÖ और लेखन कौशल के क्षेत्र में छात्र अग्रणी रहने हेतू प्रयास करना अनिवार्य है। इसलिए हिंदी के प्रयोजन - मुलक स्वरुप के मूलभूत मर्म को उद्घाटित करने का प्रामाणिक प्रयास इस पाठ्यक्रम में किया गया है। इस पाठ्यक्रम से साधारण से साधारण छात्र भी प्रयोजन - मुलक के अध्ययन में रुचि लेगा तथा सर्वांगिण विकास कर सकेगा।

–ãानात्मक उद्देश्य :-

तृतीय वर्ष के V वे सत्र मे इकाई एक क अंतर्गत प्रयोजन - मुलक ØÆ¤ß ¯Ö×¸³ÖÖÂÖÖ Ã¾Ö¹ý¯Ö, प्रयुक्ति क्षेत्र का परिचय कर सकेंगे। मनुष्य जीवन में भाषा का अनन्यसाधारण महत्व है। मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान, भावों की अभिव्यक्ति आदी भाषा के द्वारा ही करता है। सÖ×ÆÛŸµÖ¾ÖÖ ¥ÛÂ™ß ÃÖ हिंदी का महत्व अनन्यसाधारण है। आजकल प्रयोजन मुलक हिंदी का प्रयोग बहुŸÖ ²ÖœÌŸÖÖ •ÖÖ ¸ÆÖ Æî | ¯ÖµÖÖजन - मुलक हिंदी को कामकाजी हिंदी अथवा ¾µÖÖवहारिक हिंदी कहा जाता है। हिंदी का प्रयोग

अनेकानेक क्षेत्रÖ में बढते जा रहा है । इसी कारण प्रयोजन - मुलक हिंदी का स्वरुप , परिभाषा , एवं ¯ÖµÖक्ति क्षेत्र का –ाान इस इकाई से छात्रों को प्राप्त होगा ।

इकाई दों के अंतर्गत संगणक का सामान्य परिचय, उपयोगिता, वेबसाईट प्रकार तथा उपयोगिता, इंटरनेट, ई-मेल, से परिचीत हो जाएंगे । संगणक के अविष्कार ने पूरे विश्व को छोटा बनाया है । इंटरनेट ने तो विश्व के कोन - कोने को एक दुसरे से आत्याधिक निकट लाया है । एक स्थान की जानकारी क्षण भर मे पूरे विश्व के दुसरे कोने में पहूँच जाती है । मानवी बुद्धि और मशीन की अद्भूत संगम संगणक है । छात्र इसके अध्ययन के माध्यम से संगणक उपयोगिता का –ाान, इंटरनेट की प्रणाली से परिचय, तथा प्रयोग विधि का –ाान प्राप्त हो जायेगा ।

इकाई तीन में संक्षेपण का समावेश किया गया है । संक्षेपण का अभिप्राय ऐसी रचना से है ×•ÖÃÖÃा किसी विस्तृत लेख, निबंध, अनुच्छेद, †Ö¤ß ´Ö ¾µÖŒŸÖ ³ÖÖ¾ÖÖ क़ो मुल की अपेक्षा बहूŸÖ कम शब्दों ´Ö ¾µÖŒŸा किया जाता है । संक्षेपण की कला में कुशलता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त अभ्यास अपेक्षित ÆÖŸÖÖ Æ | ‡ÃÖक़ ´ÖÖ¬µÖ´Ö ÃÖ "ÖÖ¡ÖÖ में विचार क्षमता तथा कौशल का विकास होगा ।

इकाई चार में पल्लवण का समावेश किया गया है । पल्लवण का अर्थ है विस्तार | यह संक्षेपण का विरोधी है । जब किसी शब्द, सुक्ति, उद्धरण, µÖÖ लोकÖÛŒŸÖ का अर्थ स्पष्ट करते हुंए उदाहरणों अथवा काल्पनिक उडानों द्वारा 250 से 300 शब्दों मे उनका विस्तार करते है । इसम "ÖÖ¡ÖÖ ´Ö विषयपरक चिंन्तन बिंन्दुओं को एकरुपता देना, सा´Öग्री का आकार निर्धारण करना , सामग्री का पुनर्निरीक्षण करना आदी –ाान अवगत हो जायेगा।

पाठ्यक्रम की उपलब्धि :-

¯ÖÃŸÖÖŸÖ पाठ्यक्रम के अध्ययन के कारण छात्रो में हिंदी के विभिन्न रुपों के ÃÖÖ£Ö-ÃÖÖ£Ö प्रयोजन - मुलक ØÆदी के स्वरुप , परीभाषा, एवं प्रयुक्ति क्षेत्र का –ाान प्राप्त हुआ । कार्यालयी हिंदी का अर्थ ÃÖ´Ö–ाने में सहाय्यता हूई । भाषा के प्रयोजन परक उपयोगिता तथा प्रमुख कार्यो का –ाान प्राप्त हुआ | ¯ÖÖ¹/पण, संक्षेपण, तथा पल्लवण से परिचित होकर उसकी उपयोगिता का समग्र –ाान प्राप्त हुआ ।

प्रश्नपत्र - XI

प्रयोजन - ´Öü ुलक हिंदी

इकाई 1	**प्रयोजन - मुलक ú ØÆ¤ß**
	†) ¯Öx¸ü3ÖÖÂÖÖ
	ब) प्रयोजन - मुलक हिंदी स्वरुप
	कं) प्रयोजन - मुलक हिंदी : प्रयुक्ति क्षेत्र
इकाई 2	**कंम्प्युटर और हिंदी**
	अ) कंम्प्युटर का सामान्य परिचय
	ब) कंम्प्युटर की उपयोगिता
	क) वेबसाईट : प्रकार तथा उपयोगिता
	ड) इंटरनेट
	‡) ‡-´Öü»Ö
इका‡ 3	**संक्षेपन**
	अ) संक्षेपन : प्रविधि, विशेषताएँ
	ब) संक्षेपन : उदाहरण
इकाई 4	**पल्लवण**
	अ) पल्लवण : प्रविधि
	ब) पल्लवण : विशेषताएँ
	क) पल्लवण : उदाहरण

²ÖÏ. ‹. ŸÖŸÖßµÖ ¾ÖÂÖ

ØÆ¤ß - ऐच्छिक पेपर - XII ÃÖ¡Ö - VI

³ÖÖÂÖÖ ×¾Ö–ाान तथा विविध विमर्श

Course Code -U - HIN-

पारस्पारिक विचार-विमर्श से विभिन्न दृष्टियाँ उभयकर सामने आती है जो एक वि“ÖÖ¸ ÖÖ¸Ö निर्माण करती है । यही वि“ÖÖ¸ राष्ट्रनिर्माण में महत्वपूर्ण भुमिका निभाती है । वैश्विकरण के दौ¸ ´Ö ×¾Ö×¾Ö–Ö ×¾Ö´Ö¿Ö की संकल्पना की भारतीयता के सही परिप्रेक्ष्Ö ´Ö ÃÖ´Ö–ााने की आवश्यकता है । आज साहित्य में एक ऐसा मुल्य संकट उत्पÖ×¤Ÿ Æ†Ö Æ । चारों तरफ लेखक, चिंत्तक विचार वस्तू तथा अवस्था के अत की घोषणाओं का बाजार गर्म हो गया है । साहित्य की ¿ÖÖÀ¾ÖŸÖŸÖÖ ¾Ö ¯Ö×ŸÖÂŠÖ ¯Ö¸ ÃÖ¾ÖÖ»Ö ˆŠाने लगे है । नयी सदी की दहली•Ö ¯Ö¸ ÃÖ®ÖÖ™Ö ³ÖÏ Æ †Ö¸ शोर भी । अतित की विस्मृतीयाँ भी है और भविष्यके सपो भी है । आज का साहित्य नारी - ×¾Ö´Ö¿Ö ¤×»ÖŸÖ ×¾Ö´Ö¿Ö †Ö×¤¾ÖÖ¿ÖÏ - ×¾Ö´Ö¿Ö , ¯Ö¸ केंद्रीत होता दिखाई दे रहा है । मुख्यधारा में आम आदमी की –ााँकी लाना साहित्यकार का मुख्य उद्देश है । इसी बहुआयामी साहित्य के संदर्भ में बी.ए.तृतीय वर्ष के विद्यार्थीयों को विविध विमर्श के अध्यायÖ के माध्यम से इसका –ाÖन प्राप्त करना †Ö¸ ‡ÃÖÃÖ ¹ý-²Ö-रु करÖना मुख्य उद्देश है । नारी - ×¾Ö´Ö¿Ö †Ö¸ दलित विमर्श को साहित्य ने हाशिए पर धकेल दिया था । यह उपेक्षा के शिकार हुए थे । इसलिए आज आवश्यकता है कि इनपर पुन:विचार किया जाए | इस कारणवश पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है |

–ाानात्मक उद्देश्य :-

प्रथम इकाई में स्त्री विमर्श का पाठ्यक्रम सम्मिलित किया गया है । हिंदी में स्त्री प्रश्न पर मौलिक लेखन भान भी बहोत कम मात्रा मे मौजूद है । स्त्री के प्रश्न जीवन के केंद्रीय प्रश्न है । स्त्री प्रश्ना ŸÖ£ÖÖ ÃÖ¡ÖÖ ´Ö¤¤Ö की लगातार उपेक्षा की जाती है । साहित्य में स्त्री कÖß उपस्थिती या तो यौन वस्तू है या फिर वह संघर्ष कर रही है । संघर्ष करने वाली स्त्री की निर्मिती ही पितृस्त्तान होती है । ‡ÃÖß विचारधारा और ऐसे बहोत से पहलूओं का अध्ययन इस इकाई में छात्रों द्वारा किया जायेगा ।

द्वितीय इकाई में दलित विमर्श का अध्ययन किया जायेगा । इस इकाई में विद्यार्थी दलित विमर्श के पहलूओं का अध्ययन करेंगे । दलित चेतना भारतीय जाति व्यवस्था कÖß कोख से या कहे कि

अश्पृश्यता की दारुण वेदना से पैदा हुई है और यह सदियों से सताए हुए लोगो की पीडÖ †׳Ö¾µÖÛŒÝÖ Æî | ¤×»ÖÝÖ ¯ÖßÌ›Ö को रचना में रुपांतरित करने के लिए रचनाकार के पास संवेदना की गहराई व्यापक ¥ÖÂ™ìकोन, सामाजिक दायित्वबोध, सृजनात्मक क्षमता का होना आवश्यक है। इसी दृष्टिकोन, कौशल, क्षमता का –ाान और अध्ययन विद्यार्थीयों को प्राप्त होगा।

तृतीय इकाई में संरचनावाद के माध्यम से नई सोच और आधुनिक विचारों को विद्यार्थीµÖÖë के सामने लाने का प्रयास किया है। आधुनिकता और उत्तर आधुनिकतावाद के बाद संरचनावाद का अध्ययन करना विद्यार्थी को अवशयक है। इसी को ध्यान में रखतें हुए संरचनावादी तत्वशाशास्त्रीय ¥Â™ÖÝÖÖë द्वारा यह प्रस्तावित मुद्दों का छात्र अध्ययन कर सकेंगे। बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में आपनी उपस्थिती दर्ज कराने इस विचारो विद्यार्थी –ाात कर जायेंगे।

चतुर्थ इकाई में संरचनावाद की दुसरी क›ी उत्तर संरचनावाद का समावेश किया गया है। फ्रांस से जूडे इसके संम्पूर्ण इतिहास की जडा कोÖ ×¾Öªê£Öá ÃÖ´Ö–ा पायेंगे। भाषा वि–ाान और संरचनात्मक भाषा वि–ाान का अध्ययन छात्र इस इकाई के माध्यम से कर सकेंगें साथ ही ‘फर्डिनंड-›ß ÃÖ¸Öã¸’ †Öî¸ ‘Œ»ÖÖ› ×»Ö¾ÖßÃ™ÖÃÖ’ के विचारों का भी अध्ययन चिंतन करेंगे।

.पाठ्यक्रम की उपलब्धि :-

बी.ए.तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम में सम्मिलत किये गये इस विविधविमर्श और विचारों के माध्यम सें विद्यार्थीयों को दलित विमर्श तथा Ã¡Öß - विमर्श की महत्वपूर्ण कडियों की पहचान हुई। स्त्री जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्न सम–ाये तथा वास्तविक जीवन कोß पहचान हुई। साथ ही दलित जीवन की पिडा ¡ÖÖÃÖदी, शोषण, अत्याचार का गहन अध्ययन छात्रो नें किया और एक नये और बेहतर समाज निर्माण की प्रेरणा प्राप्त हुई।

संरचनावाद और उत्तरसंरचना वाद के माध्यम से 20 वी शताब्दी तथा उसके उत्तरार्ध में भाषा तथा संरचना में होनेवाले बदलाव की सटिक और समग्र जानकारी प्राप्त कर छात्र में आधुनिकता तथा उत्तर आधुनिकता के धरातला पर साहित्य, समाज , संस्कृ×ÝÖ परंम्परा में आधुनिकता की एक अलग परंम्परा ¿Ö¹ý Æã |

प्रश्नपत्र - XII

³ÖÖÂÖÖ ×¾Ö–ÖÖन तथा ×¾Ö×¾Ö–Ö ×¾Ö´Ö¿Ö

इकाई 1 †) Ã¡Öß -विमर्श : स्वरुप और संवेदना

इकाई 2 अ) दलित विमर्श : स्वरुप और संवेदना

इकाई 3 अ) संरचनावाद : स्वरुप और अवधारणा

इकाई 4 अ) उत्तरसंरचनावाद : स्वरुप और अवधारणÖÖ

संदर्भ ग्रंथ सुचि :-

1) ³ÖÖÂÖÖ ×¾Ö–ÖÖन : कामता प्रसाद गुरु
2) ³ÖÖÂÖÖ ×¾Ö–ÖÖन : डॉ. भोलानाथ तिवारी
3) ³ÖÖÂÖÖ ×¾Ö–ÖÖन : डॉ. अंबादास देशमुख
4) बाजार के बीच बाजार के खिलाफ : प्रभा खेतान
5) स्त्री विमर्श : दिप्ती खंडेलÖ¾ÖÖ»Ö
6) साठ्ठोत्तरी के पश्चात स्त्री लोखिकाओं की कहानियों मे व्यक्त स्त्री समस्याऐं : डॉ विजया वारद
7) दलित साहित्य स्वरुप और संवदेना : डॉ.सुर्यनारायण रणसु³Ö
8) दलित चेतना के संदर्भ में कथाकार ओमप्रकाश वाल्मिकि : डॉ. जोगिंद्रकुमार संधु
9) हिंदी दलित साहित्य के परिप्रेक्ष्य में ओमप्रकाश वाल्मिकि के साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन - सुनीता रावत

²ÖÌß. ‹. III (2015-16, 16 -17, 17 -18)

ØÆ¤ß - ऐच्छिक (पेपर - XIII) **ÃÖ¡Ö - VI**

ÃÖÖ×ÆŸµÖ¿ÖÖÃ¡Ö - XIII

Course Code -U - HIN- 605

QIM.1.1.1 -

बी.ए.तृतीय वर्ष हिंदी ऐच्छिक छठे आयन में तेरहवें पेपर साहित्यशास्त्र के अंतर्गत साहित्य का सैद्धांतिक दृष्टी ÃÖ ¸ÃÖ×ÿÖ ×ÃÖ¬¤ÖÖÓ, वक्रोक्ति ØÃाध्दांत और औचित्य सिंध्दांत को पाठ्यक्रम के लिए निश्चित किया गया । इन सिध्दांत के माध्यम से विद्यार्थी साहित्य के उन मानदण›ाे को सम–ाने की कोशिश करेंगे जिनमें उनकी चिंतन क्षमता बढेगी ।

–ाानात्मक उद¤¿µÖ (Learing Objectives) :-

¸ÃÖ×ÿÖ सिध्दांत, वक्रोक्ति सिध्दांत के संबंध में विभिन्न आचार्यो के मतो कोÖ ÃÖ´Ö–ाने और साहित्य के उन मर्मो को सम–ाने के उद्‌देश्य से यह पाठ्यक्रम निश्चित किया गया, जिसके द्वारा विद्यार्थी उन सिध्दांतो के ऐतिहासिक परिप्रेक्षµÖ ´Ö ÃÖ´Ö–ाने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम विद्यार्थीयों के लिए निश्चित रखा गया ।

पाठयक्रम की उपलब्धि (Course Otucome):-

¯ÖÃÖÿÖÖÿÖ पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी साहित्यशास्त्र के विभिन्न सिंध्दांतो को सैद्धांतिक दृÖÂ™ से पढने से भारतीय आचार्यो को पढने और सम–ाने का अवसर मिला । काव्य में औचित्य का महत्त्व, काव्य में उक्ति की वक्रता और ¸ÃÖ×ÿÖ सिध्दांत में काव्य परंपरा को सम–ाने की कोशिश विद्यार्थीयों ने की ।

प्रश्नपत्र - XIII

ÃÖÖ×ÆŸµÖ¿ÖÖÃ¡Ö

इकाई 1 ¸ß×ŸÖ ×ÃÖ¬¤ÖŸÖ

अ) रीति का अर्थ

ब) विविध आचार्यो के रीति संबंधी मत

इकाई 2 अ) रीति के प्रकार

²Ö) ¸ß×ŸÖ और गूण

क) रीति और शैली

इकाई 3 वक्रोक्ति सिध्दांत

अ) वक्रोक्ति का अर्थ

ब) वक्रोक्ति की परंपरा / इतिहास

क) वक्रोक्ति के भेद

इकाई 4 †Ö×"ÖŸµÖ ×ÃÖ¬¤ÖŸÖ

अ) औचित्य की ऐतिहासिक परंपरा

²Ö) †Ö×"ÖŸµÖ सिध्दांत का विकास

क) औचित्य के भेद

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ÃÖÖ×ÆŸµÖ¿ÖÖÃ¡Ö :- डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे
2. ÃÖÖ×ÆŸµÖ¿ÖÖÃ¡Ö :- डॉ. माधव सोनटक्के

²Öß. <. III ŸÖŸÖßµÖ ¾ÖÂÖ

ØÆ¤ß - ऐच्छिक पेपर - XIV ÃÖ¡Ö - VI

प्रयोजन - मुलक ØÆ¤ß -

Course Code -U - HIN- 606

आज की आवश्यकता है हिंदी के नए सिरे से गœने की, उसके पारंपारिक रुप में न तकनिकी –ाान की वृध्दी करने की । हिंदी में सर्जनात्मक लेखन की भरमार है । †²Ö ÃÖÖ×ÆŸµÖ ÃÖ •µÖÖ¤Ö ³ÖÖÂÖÖ और भाषा से जूडी तकनिकी कीß और ध्यान देना आवश्यक है । प्रयोजन - मुलक हिंदी के उपयोगी साहित्य के लेखन, अध्ययन के माध्यम से उसे प्रकाश में लाने की आवश्यकता है ।

²Öß.<. तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम में प्रयोजन - मुलक हिंदी के माध्यम से विद्यार्थी अपने जीवन में महत्वपूर्ण कार्य कर सकते है । कार्यालयीन हिंदी वह हिंदी है जिसका दैनिक व्यवहार वाणिज्यक पत्राचार , प्रशासन, ¾µÖ¯ÖÖ¸ - चिकित्सा, संगीत, वि–ाान, आदि क्षेत्रो में प्रयोग होता है । जिसका प्रयोग कार्यालय, कार्यालय के कर्मचारी एं¾Ö अधिकारी नित्य प्रति करते है। बी.ए. तृतीय वर्ष के VI ¾Ö ÃÖ¡Ö ´Ö कार्यालयीन हिंदी के प्रमूख कार्य टिप्पण, प्रतिवेदन, अनुवाद, मीडिया लेखन इन विषयों का –ाान विद्यार्थीयों को अवगत कराने से विद्यार्थी अपने तकनिकी तथा कार्यालयीन जीवन मे सफलता प्राप्त कर सकतें है ।

–ाानात्मक उद्देश्य :-

बी.ए. तृतीय वर्ष के VI सत्र में इकाई एक के अंतर्गत टि¯Ö्ण लेखन का समावेश किया गया है । टिप्पण लेखन में विचाराधीन प्रश्न के बारे में सभी बातें लिखी जाती है । इसमें निर्णय करने और आदेश देने में सुविधा होती है । विचाराधीन प्रश्न कीÖ ¯Ö¾Ö ‡×ŸÖÆÖÃÖ, नीति, नियम आदी बातों काउल्लेख कर अंत में निर्णय की उचितता के संबंध में सु–Ö¾Ö ×¤µÖÖ •ÖÖŸÖÖ Æ |

ईकाई दो के अंतर्गत अनुवाद लेखन का समावेश किया गया है । इस पाठ्यक्रम के माध्यम ÃÖ "Ö¡Ö अनुवाद की अवधारणा से परिचित हो जायेंगे । अनुवाद क्या है ? उसका श्वक्य क्या है ? उसके ×ÃÖ¬¤ÖŸÖ Œµ़ÖÖ Æ ? साहित्यीक अनुवाद क्या होता है ? व्यावहारिक अनुवाद ŒµÖÖ ÆÖŸÖÖ Æ ? उसकी प्रक्रीया क्या है ? उसके प्रकार कौनसे है ? उसकी सीमाएँ ŒµÖÖ Æ ? सफल अनुवाद तथा आदर्श

अनुवाद किसे कहा जाता है ? अनुवाद के गुण कौन-कौन से... ? µÖÆü –ाान छात्रों को प्राप्त हो जायेगा |

मीडिया लेखन का समावेश भी तृतीय वर्ष के पाठयक्रम में किया है । भाषा और जनसंचार माध्यमों में अन्योय संबंध है । जन संचार माध्यमो को संप्रक्षणीय बनाने का कार्य भाषा ही करती है । भाषा के बगैर किसी भी जनसंचार का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता । भाषा को जनसंचार की रीढ की हड्डी भी कहा जाता है । मीडिया ´Ö ´Ö×¦üÝÖ माध्यम का †पना स्वतंत्र महत्व होता है । हस्तलिखित एवं यांत्रिक मुद्रण की सामग्री का समावेश इस माध्यम में होता है । वर्तमान युग मीडिया का युग है । दशकों की अभिरुचि जागृत और वृंध्दिंगत करने की प्रक्रिया में भ्रम जनसंचार ´ÖÖ¬µÖ´Ö ¸ü×›üµÖÖ ¾ÖÖÝÖÖ प्रस्तूतीकरण का महत्वपूर्ण कार्य है । मीडिया लेखन में दृश्य-श्रव्य लेखन का प्रयोग बहुत अधिक मात्रा ´Ö ÆüÖ ¸üÆüÖ Æü | ‡ÃÖßÖ×»Ö‹ ”ûÖ¡ÖÖë कों इस विषय के बारे में –ाान देकर तथा अध्ययन कर भविष्य प्रकाशमय बनाने में सहाय्यता होगी ।

पाठ्यक्रम की उपल×¯¬ü :-

अनुवाद वि–ाान है, शिला है या कला है इस प्रश्न का निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता । किंतु संदर्भ के अनूसार इसका स्वरुप निर्धारित होगा । भाषाएँ संस्कृ×ÝÖ के क्षितीजों का विस्तार करÝÖß है । कोई दो भाषाएँ एक जैसी नही होती इसलिए अनुवा¤ की आवश्यकता होती है । इसी आवश्यकता का जानते हुऐ विद्यार्थी पाठ्यक्रम को अध्ययन कर अनुवाद कला में सफल होते हुऐ दिखाई देते है । टिप्पण लेखन में विद्यार्थीयों को कार्यालयीन कामकाज में समस्या का समाधान, विषय का उपविभाजन, पुनरुक्ति के दोंषो से मुक्ति, संक्षिप्तता एवं स्पष्टता का –ाान प्रÖ¯ÝÖ Æü†Ö |

मीडीया लेखन के माध्यम से जनसंचारीय हिंदी का स्वरुप विद्यार्थी सम–Ö ÝÖµÖê | ´Ö×¦üÝÖ ´ÖÖ¬µÖ´Ö एवं हिंदी भाषा के संबंध से विद्यार्थी परिचित हो गये । समाचार लेखन की प्रक्रिया उसके पहलुंओं से परिचित हो गये ।

प्रश्नपत्र - XIV

प्रयोजन - मुलक ÌÆ¤ß

इकाई 1 टिप्पण

†) x™¯Öû : ¯Öx¾Öx−Ö

ब) टिप्पण : विशेषताएँ

क) टिप्पण : उदाहरण

इकाई 2 प्रतिवेदन

अ) प्रतिवेदन : प्रविधि

²ा) प्रतिवेदन : विशेषताएँ

इकाई 3 अनुवाद

अ) अनूवाद : परिभाषा

ब) अनुवाद का स्वरुप एवम् प्रक्रिया

क) अनुवादक के गुण

ड) साहित्यिक अनुवाद

इकाई 4 मीडिया लेखन

अ) जनसंचार माध्यम का सामान्य परिचय

ब) मुद्रित जनसंचार माध्यम : समाचार लेखन, रिर्पोताज

क) श्रव्य जनसंचार माध्यम : रेडिओ वार्ता प्रस्तुतीकरण

›) ¥¿µÖ -श्रव्य जनसंचार माध्यम वि–ापन लेखन, डॉक्युमेंट्री

संदर्भ ग्रंथ सूची :

प्रयोजन - मूलक ØÆ¤ß :- डॉ.पृथ्वीनाथ पाण्डेय

1) प्रयोजन - मूलक ØÆ¤ß :- रघूनंदन प्रसाद शर्मा

2) प्रयोजन - मूलक ØÆ¤ß :- डॉ. माधव सोनटक्के

3) प्रयोजन - मूलक ØÆ¤ß :- डॉ. ओमप्रकाश सिंघल

4) मीडिया लेखन :- ¸´Ö¿Ö“Ö¦ ×¡Ö¯ÖÖšß

5) मीडिया लेखन :- ×ÃÖ¬¤Ö्त और व्यवहार : डॉ.चंद्रप्रकाश

6) अनुवाद :- स्वरुप एवं सिध्दांत : डॉ. के.वी. शहा

7) अनुवाद :- सिध्दांत और समस्याए : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

8) अनूवाद :- ×ÃÖ¬¤ÖŸÖ और रुपरेखा : डॉ. सुरेश कुमार

9) प्रयोजन - मूलक हिंदी : अधुनातन आया´Ö : ›Ö. †²ÖÖ¤ास देशमुख

10) व्यवहारिक हिंदी :- प्रा रामानुज गिल्डा